(35)

राष्ट्रीय गीतमाला

डॉ. धर्मा यादव

राष्ट्रीय गीतमाला डॉ. धर्मा यादव

ISBN 978-81-922194-9-3
9788192219493

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

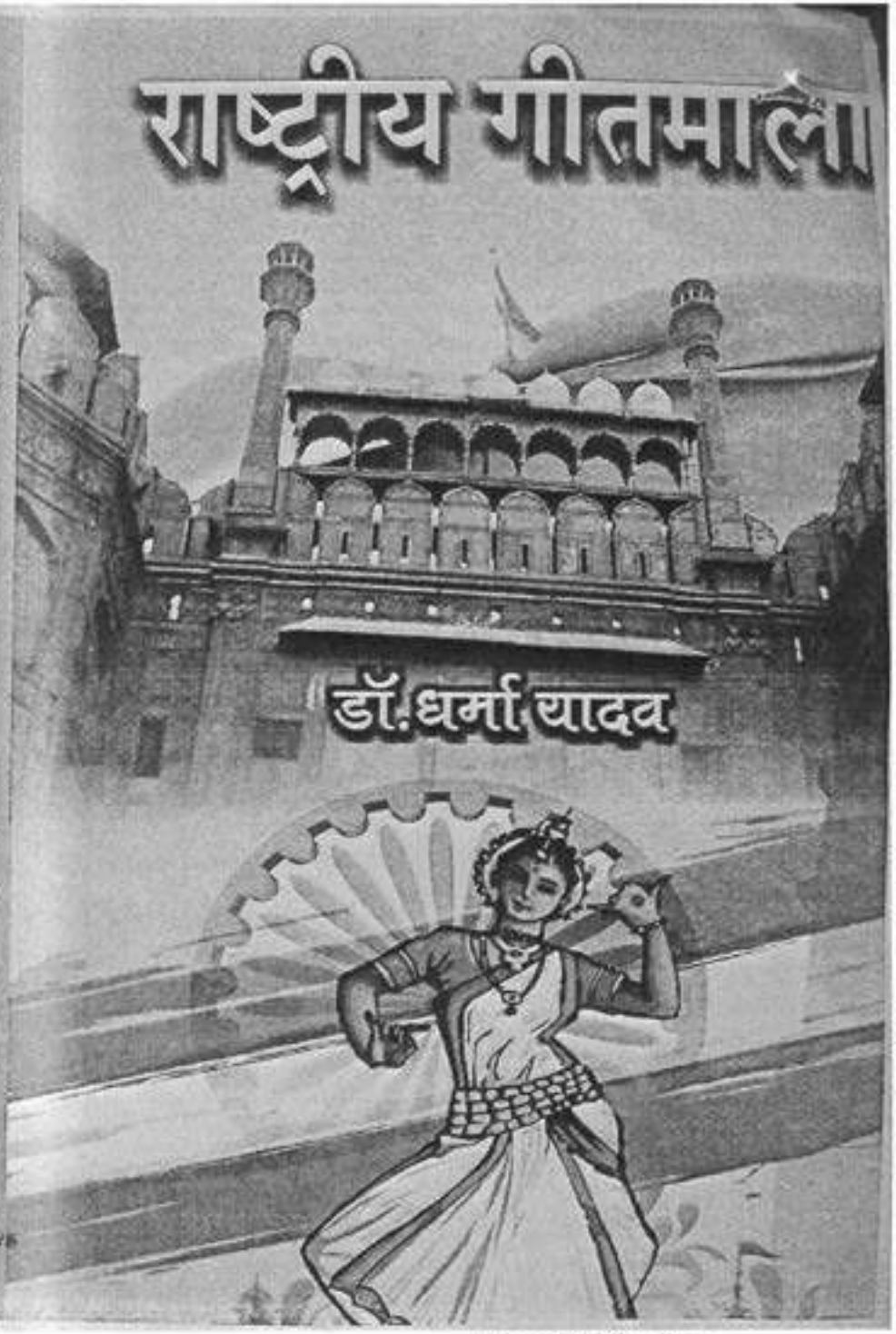

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय गीतमाला

संपादक
डॉ. धर्मा यादव

प्रकाशक
आशा पब्लिकेशन्स
264/310, प्रताप नगर, जयपुर

©
प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण
2017

ISBN
978-81-922194-9-3

मूल्य
250/- मात्र

लेजर टाइपसैटिंग
लोकेश कम्प्यूटर्स

मुद्रक
शीतल ऑफसैट, जयपुर

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

भूमिका

आदिकाल से ओजपूर्ण कविता के माध्यम से आश्रयदाता राजा को रणभूमि में विजयश्री दिलाने वाले कवियों के किस्से हम पढ़ते-सुनते आए हैं। कवि और कविता की सामर्थ्य की बात कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन भी करते हैं-

'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाये...'

आज़ादी के दौर में, युवाओं में नवजागरण और जोश का संचार करने में कवियों की भूमिका क्रान्तिकारियों से कम न थीं। जेल में रहकर भी छद्म नाम से ये निरन्तर लिखते रहे और देश-हित, युवाओं को प्रेरित करते रहे। उस दौर में सिनेमा ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी ये गीत शहीदों के त्याग और शौर्य की याद दिलाते हैं।

एक समय था जब शिक्षण संस्थाओं में गणतन्त्र दिवस और स्वतन्त्रता दिवस जैसे विशेष आयोजन के अवसर पर गाये जाने वाले देशभक्ति गीतों का अभ्यास करवाया जाता था। इसमें देशभक्ति कविता, गीत, फिल्मी गीत तो होते ही थे कुछ अभ्यास कराने वाले शिक्षक द्वारा तुकबन्दी कर बनाये गये गीत भी होते थे। आज यह परम्परा लुप्त होती जा रही है। आज केवल रिकार्ड किए हुए फिल्मी देशभक्ति गीत ही सुनने को मिलते हैं।

पुस्तक में देशभक्ति गीतों का संग्रह है जिसमें फिल्मी, गैर फिल्मी गीत हैं। आशा है विद्यार्थी एवं सुधी पाठक सुने हुए गीतों को पढ़कर, उनके मर्म को समझेंगे और साथ ही कुछ नये गीतों का रसास्वादन भी करेंगे।

इसी प्रयास के साथ जिन गीतकारों व कवियों के गीत इस पुस्तक में शामिल हैं, उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

जून 2017

डॉ. धर्मा यादव

Scanned with CamScanner